हरिद्वार

कक्षा 8 हिंदी - एक आध्यात्मिक यात्रा

By: Vipin Kumar

पाठ और लेखक परिचय

लेखक: भारतेंदु हरिश्चंद्र

यात्रा वर्ष: 1871

माध्यम: ‘कविवचन सुधा’ पत्रिका के संपादक को लिखा गया पत्र।

यह केवल यात्रा-वृत्तांत नहीं, बल्कि हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता, गंगा की पवित्रता और आत्मिक अनुभूति का सजीव चित्रण है।

हरिद्वार का प्राकृतिक सौंदर्य

पर्वत और लताएँ

हरे-भरे पहाड़ जिन पर लताएँ सज्जनों के शुभ मनोरथों की तरह लहलहा रही हैं।

तपस्वी वृक्ष

विशाल वृक्ष, जो एक पैर पर खड़े होकर साधुओं की भाँति धूप, ओस और वर्षा सहते हैं।

परोपकारी प्रकृति

फल, फूल, पत्ते और लकड़ी से निस्वार्थ भाव से लोगों की इच्छाएँ पूरी करते हैं (पत्थर मारने पर भी फल देते हैं)।

निर्भय पक्षी

वृक्षों पर पक्षी बिना किसी शिकारी (बधिक) के डर के प्रसन्नता से कल्लोल करते हैं।

त्रिभुवन पावनी श्री गंगा

अत्यंत शीतल (बर्फ में जमे शरबत जैसा मीठा)	स्वच्छ और श्वेत जल	शीतल वायु के स्पर्श से वातावरण पावन

गंगा की मुख्य धारा

नीलधारा

एक सुंदर, नीचे पर्वत के पास से बहने वाली शांत धारा।

श्री गंगा

मुख्य पवित्र धारा, जहाँ जल के वेग का तीव्र शब्द होता है।

प्रमुख घाट और मंदिर

हरि की पैड़ी

- हरिद्वार का मुख्य पक्का घाट जहाँ पवित्र स्नान होता है।
- **विशिष्टता:** यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं, दूसरा देवता नहीं।

चण्डिका देवी मंदिर

नीलधारा के तट पर एक सुंदर, नुकीले (चुटीले) पर्वत के शिखर पर स्थित है।

वैरागियों ने मठ-मंदिर कई बना लिए हैं, पर गंगा जी की महिमा यहाँ सर्वोच्च है।

पंच प्रमुख तीर्थ स्थल

हरिद्वार क्षेत्र

1. **हरिद्वार**
(हरि की पैड़ी का मुख्य स्नान घाट)

2. **कुशावर्त**
(हरि की पैड़ी के समीप स्थित पवित्र कुंड)

3. **नीलधारा**
(गंगा की शांत दूसरी धारा)

4. **विल्व पर्वत**
(जहाँ भगवान विल्वेश्वर महादेव विराजमान हैं)

5. **कनखल**
(अत्यंत उत्तम और ऐतिहासिक तीर्थ स्थल)

कनखल का ऐतिहासिक महत्व

राजा दक्ष का यज्ञ

कनखल वही प्राचीन स्थान है जहाँ सती के पिता राजा दक्ष ने विशाल यज्ञ किया था।

सती का आत्मदाह

शिव जी का अपमान सहन न कर पाने के कारण माता सती ने यहीं स्वयं को भस्म कर दिया था।

वर्तमान स्वरूप

अब यहाँ छोटे-छोटे मकान और प्रसिद्ध धनिकों (जैसे भारामल जैकृष्णदास खत्री) के आवास स्थित हैं।

शांत वातावरण और निर्मल समाज

संतोषी स्वभाव: कनखल व ज्वालापुर से आने वाले पंडे और दुकानदार अत्यंत संतोषी हैं, जो थोड़े दान में भी प्रसन्न रहते हैं।

साधु-संतों का वास: शुद्ध निर्मल साधुओं के सेवन योग्य तीर्थ।

अवगुणों का अभाव: यह ऐसा निर्मल तीर्थ है जहाँ 'इच्छा-क्रोध की खानि' (काम, क्रोध, लोभ वाले) मनुष्य टिक ही नहीं सकते।

शांति: यहाँ झगड़े-लड़ाई का कोई नामोनिशान नहीं है।

लेखक का व्यक्तिगत अनुभव

1

निवास (Stay) - दीवान कृपा राम के बंगले में ठहराव; जहाँ चारों ओर से शीतल और सुखद हवा आती थी।

2

धार्मिक कार्य (Rituals) - रात्रि में ग्रहण के समय आनंदपूर्वक गंगा स्नान और दिन में मित्र कल्लू जी के साथ श्रीमद्भागवत का पारायण।

3

सादगी (Simplicity) - स्वयं रसोई बनाकर, गंगा किनारे पत्थरों पर जल के अत्यंत निकट बैठकर भोजन करना।

पत्थर पर किया गया वह भोजन, सोने की थाली के भोज से भी कहीं अधिक सुखद था।

आध्यात्मिक अनुभूति का त्रिकोण
ज्ञान (Knowledge)
जीवन के सत्य और
निर्मलता की समझ।
आत्मिक
शांति
भक्ति
(Devotion)
गंगा और ईश्वर के
प्रति निस्वार्थ प्रेम।
वैराग्य
(Detachment)
सांसारिक झगड़े-फसाद
और लोभ से पूर्ण
मुक्ति।
यहाँ चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।

हरिद्वार की विशेष वस्तुएँ

पवित्र जनेऊ

यहाँ का जनेऊ (यज्ञोपवीत) अत्यंत महीन, उज्ज्वल और शुद्ध बनता है।

सुगंधित कुशा

यहाँ की कुशा विलक्षण है। इसमें से दालचीनी और जावित्री जैसी दिव्य सुगंध आती है।

यह पुण्यभूमि ऐसी है कि यहाँ की साधारण घास भी सुगंधमय हो जाती है।

महत्वपूर्ण शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
त्रिभुवन पावनी	तीनों लोकों को पवित्र करने वाली (गंगा)
वल्ली	बेलें या लताएँ
अर्थी / विमुख	मृत शरीर (याचक) / रुचि न रखना
बधिक	क्रूर शिकारी
पारायण	धार्मिक ग्रंथ का निरंतर पाठ
चुटीला पर्वत	नुकीली और ऊँची चोटी वाली पहाड़ी
कुशा	धार्मिक कार्यों में प्रयुक्त होने वाली पवित्र घास

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

Q

लेखक ने वृक्षों की तुलना साधुओं से क्यों की है?

A

क्योंकि वृक्ष साधुओं की तरह एक पैर पर खड़े होकर (तपस्या करते हुए) धूप, वर्षा और ओस सहते हैं और पत्थर मारने पर भी निस्वार्थ भाव से फल-फूल देते हैं।

Q

हरिद्वार के पाँच प्रमुख तीर्थ कौन से हैं?

A

हरिद्वार (हरि की पैड़ी), कुशावर्त, नीलधारा, विल्व पर्वत और कनखल।

पाठ से मिलने वाली सीख

प्रकृति प्रेम और निस्वार्थ सेवा

प्रकृति (वृक्ष, नदियाँ, पर्वत) निस्वार्थ भाव से हमारा पालन करती है, हमें इसका संरक्षण करना चाहिए और परोपकारी बनना चाहिए।

धार्मिक पवित्रता और सरलता

धर्म का वास्तविक अर्थ दिखावा या आडंबर नहीं, बल्कि मन की शुद्धि, संतोष और सादगी है।

सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान

हरिद्वार जैसे तीर्थ स्थल भारत की महान आध्यात्मिक और पौराणिक परंपराओं के जीवंत प्रतीक हैं।

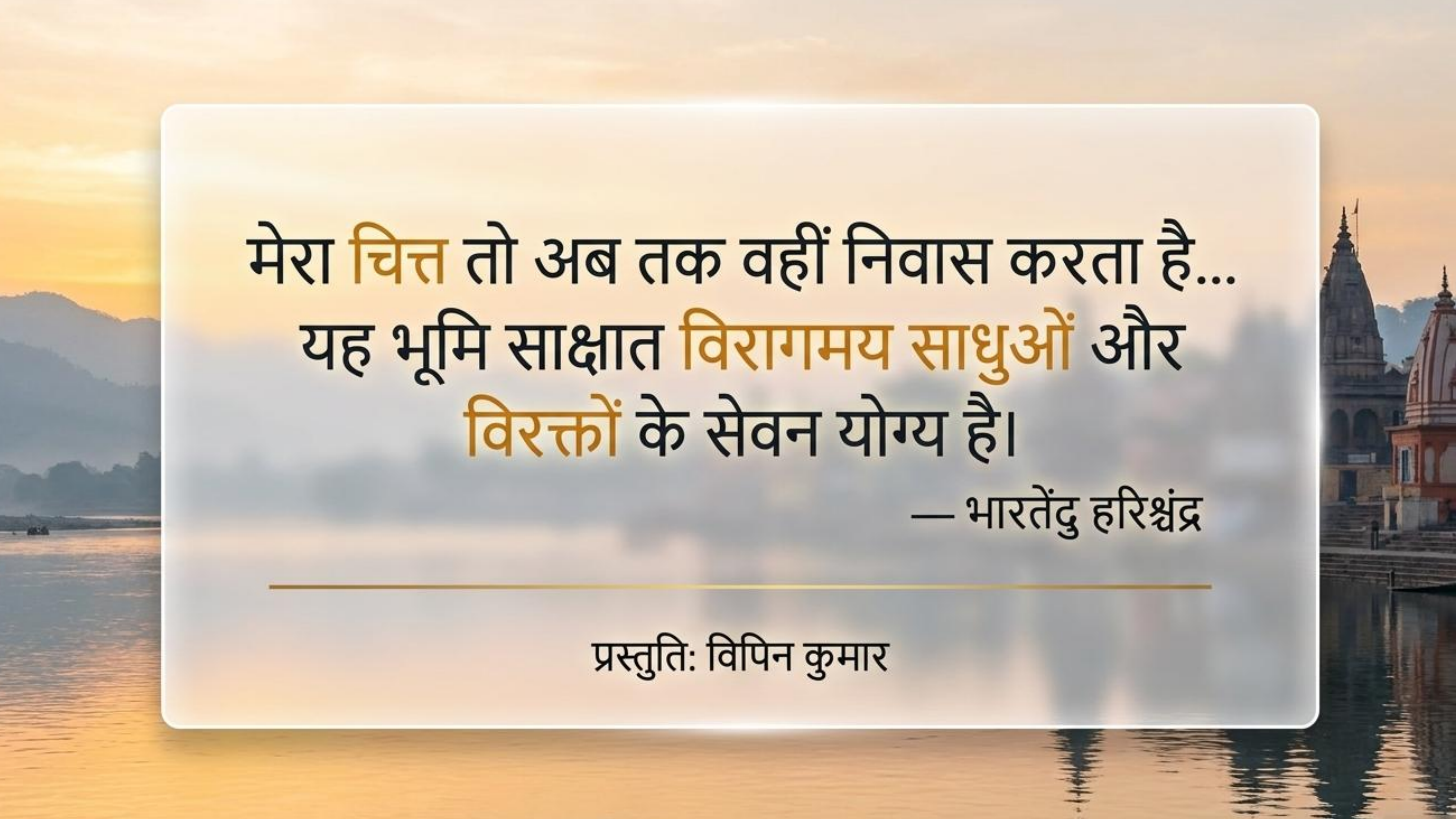
मेरा चित्त तो अब तक वहीं निवास करता है...
यह भूमि साक्षात विरागमय साधुओं और
विरक्तों के सेवन योग्य है।
— भारतेंदु हरिश्चंद्र
प्रस्तुति: विपिन कुमार